International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(3): 10-11

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(3): 10-11
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-03-2016
Accepted: 13-04-2016

डॉ. ओम प्रकाश
पी. एच. डी., संस्कृत विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

Correspondence
डॉ. ओम प्रकाश
पी. एच. डी., संस्कृत विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

भविष्यपुराण में भारतीय संस्कृति के व्रतों का महत्त्व एवं नियमों का विश्लेषण

डॉ. ओम प्रकाश

भारतीय संस्कृति में व्रतों का अत्यधिक महत्त्व है। समाज में प्रचलित अनेकानेक व्रतों तथा अनुष्ठानों को अपनाकर प्राणी अपना तथा समाज का कल्याण करता है। व्रतों के परिशीलन से ज्ञात होता है कि ये भारतीय समाज के किसी भी जाति या वर्ग में किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं। इन व्रतों का मानव जीवन में जितना अधिक महत्त्व है उतना शायद किसी भी कृत्य का महत्त्व नहीं है। व्रतों के महत्त्व को वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक के सभी मनीषियों के द्वारा स्वीकार किया गया है। यथा–

स्वर्भानोरधयदिन्द्र माया अवो दिवोवर्त्तमाना अवाहन्।
मूलहं सूर्य्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः।। [1]

इस मन्त्र का आशय यह है कि हे इन्द्र जब तुमने सूर्य के अधो देश में वर्तमान स्वर भानु असुर द्युतिमान माया हो दूर से ही अपसारित किया था तब व्रत विघातक अन्धकार द्वारा समाच्छन्न सूर्य को अत्रि ने चार ऋचाओं द्वारा प्रकाशित किया था। समाज में सुख तथा वैभव को प्राप्त करने के लिए व्रतों तथा अनुष्ठानों का विधान मनुष्य के द्वारा किया जाता है। प्राचीन काल से ही भारतीय मनीषी व्रतों से सुख समृद्धि को प्राप्त होने की बात कहते हैं– ऋग्वेद के पाँचव मण्डल में कहा गया है

''जो मनुष्य निश्चित धर्म व्रत तथा शील को धारण करते हैं वे दृढ़ सुख से युक्त होते हैं।'' [2]

अत एव यह ज्ञात होता है कि वेदों में व्रतों का अत्यधिक महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। व्रतों का चाहे धार्मिक महत्त्व हो चाहे दार्शनिक महत्त्व हो सभी क्षेत्रों में इसको नकारा नहीं जा सकता है। वेद जो कि अपौरूषेय माने जाते हैं उनमें भी व्रतों का उल्लेख यत्र–तत्र पाया जाता है। व्रतों को ही धारण करके इन्द्र अपने पराक्रम को प्रकट करने में सक्षम होता है। यथा–

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे
इन्द्रस्य युज्यः सखा। [3]

व्रतों की महिमा का गायन सभी विद्वानों ने किया है। व्रतों के करने से मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक दुखों की निवृत्ति तो होती है साथ ही साथ में धार्मिक कृत्य होने से इसके करने से मानव को अभ्युदय की भी प्राप्ति होती है। अतः सांसारिक जीवन में तो व्रतों का महत्त्व है ही, साथ में पारलौकिक सिद्धि को प्राप्त करने में व्रतों का अत्यधिक महत्त्व माना जाता है। अथर्ववेद में कहा गया है। यथा–

समबत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषु।। [4]

व्रतों का महत्व प्रत्येक दृष्टि से देखा जाता है। सभी प्राणियों को कल्याण इन व्रतों के करने से होता है। धार्मिक कृत्यों में व्रतों को धर्म का एक प्रकार से आधार कहा जा सकता है। औदुम्बर संहिता में कहा गया है कि– ''वर्णाश्रम धर्म पालन करने वाले एवं तपस्वियों को सैकड़ों वर्ष तक अग्निहोत्र करने

से और हजारों राजसूय यज्ञों में जो फल प्राप्त होता है वही फल धार्मिक व्रत श्रीकृष्ण जयन्ती करने से साधक को मिल जाता है। [5] जन्माष्टमी का व्रत जो करता है उसे धर्म काम तथा मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है तथा वह विष्णु भगवान में लीन हो जाता है। यथा–

'धर्ममर्थ च कामं च मुक्तिं च मुनिपुङ्गव।
ददाति वाञ्छितान् कामान् भाद्रके चासिताष्टमी।। [6]

कृष्ण जयन्ती के व्रत का माहात्म्य यह है कि जो इस व्रत को करता है उसके सम्पूर्ण पापों को नष्ट कर देता है तथा साथ ही समस्त पुण्यों को प्रदान करने वाला है। इस प्रकार भविष्यपुराण के अध्ययन करने से धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक व्रतों का महत्त्व अनिवार्य है। भविष्य पुराण में दार्शीनक व्रतों के विषय में उल्लेख प्राप्त होता है कि जो प्राणी तिलक व्रत को करता है वह इन्द्र के पद को प्राप्त कर लेता है। [7] तथा व्यक्ति आचरण से साधक मधुर स्वर सुन्दर स्वरूप चौंसठ कलाओं में निपुण एवं विद्यावदात ह्रदय बन जाता है और तीन हजार कल्पों तक विद्याधर पुर में निवास करता है। [8]

भारतीय समाज में ऐसी मान्यता है कि व्रतों के करने से धनधान्य की पूर्ति होती है, इससे व्यक्ति को इस लोक में आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति हो जाती है और वह समृद्धि तथा वैभव से युक्त जीवन को बिताते हुए अत्यन्त सुख को प्राप्त करता है। इस प्रकार भविष्यपुराण [9] में सांस्कृतिक व्रतों का महत्त्व प्राप्त होता है।

भविष्यपुराण [10] में व्रतों के राजनीतिक महत्त्व के बारे में उल्लेख आया है कि राजा लोग भी व्रतों को करते थे, तथा उन व्रतों से वह अपने अन्दर एक दिव्य शक्ति का अनुभव करते थे। जिस से समाज में या राज्य में व्रतों को धारण करने वाला राजा होता है– वहाँ की प्रजा भी अनुशासित होती है साथ ही सुख समुद्धि भी प्राप्त करती है।

इस प्रकार से व्रतों का चाहे धार्मिक महत्त्व हो चाहे राजनीतिक महत्त्व हो या सांस्कृतिक महत्त्व कम नहीं आँका जा सकता है अतः 'व्रत को करने वाला पुण्य के क्षीण हो जाने पर दिव्य शरीर धारण कर वह पुण्यात्मा प्राणी यशस्वी, गतिमान, धैर्यशील, प्रवक्ता, भाग्यशाली तथा स्पन्दता पूर्वक कार्य करने वाला होता है। [11]

व्रतों के नियम

व्रतों के करने से लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य इन व्रतों को धारण करता है उसे अनेकानेक नियमों का पालन करना पड़ता है।

व्रत करने वाले को स्नान तो नित्य ही करना चाहिए खारी वस्तुएं, शहद, लवण, मदिरा इत्यादि के सेवन से बचना चाहिए अर्थात् इन वस्तुओं का परित्याग कर देना चाहिए।

नित्यस्नायी मिताहारो गुरूदेवद्विजार्चकः।।
क्षारं क्षौद्रं च लवणं मधु मांसानि वर्जयेत्।। [12]

व्रत करने वाले को चाहिए कि वह किसी भी वस्तु की चोरी न करे, किसी प्राणिमात्र की हिंसा न करे। किसी भी वस्तु के प्रति लालच न करे इन पाँच प्रकार के नियमों का उल्लेख लिङ्ग महापुराण में प्राप्त होता है। यथा–

अस्तेयं ब्रह्मचर्यं च अलोभस्त्याग एव च।
व्रतानि पञ्च भिक्षूणां हिंसा परमां त्विह।। [13]

व्रतों को धारण करने वाले व्यक्ति को जो भी ताज्य वस्तुएं हैं तथा जो भी नियम हैं उन सभी का पालन करना चाहिए। उपवास को जिसने धारण किया है, वह अभ्यङ्ग उबटन पूर्वक स्नान करे क्योंकि स्नानोत्तर उबटन रूप को नाश करने वाला होता है। अतः उसे प्रयत्न पूर्वक त्याग देना चाहिए। गन्ध, अलङ्कार, पुष्पमाला, अनुलेपन, धन्तधावन तथा अञ्जन यह सब उपवास में दूषित नहीं होते हैं। उपवास करने वाली स्त्रियाँ अञ्यन पालन कुङ्कुम तथा रक्त वस्त्र धारण करें क्योंकि यह वस्तुएं सौभाग्य को बढ़ाने वाली हैं विधवा यति चान्द्रायण मार्ग से तथा कुमारी अपनी इच्छानुसार उपवास करें। यथा–

अञ्जनं च सुताम्बूलं कुङ्कुमं रक्तवाससी।
धारयेत्सोपवासाऽपि अवैधव्यकरं यतः।
विधवा यतिमार्गेण कुमारी वा यदृक्षया।। [14]

व्रत करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि ''वह क्रोधित न हो, क्योंकि यदि वह व्रत धारण करने के समय क्रोध करता है तो उसका व्रत व्यर्थ हो जाता है। इस प्रकार व्रत–नियमों का पालन करते हुए मनुष्य अपना एवं समाज का कल्याण कर सकता है।

पादटिप्पणियाँ

1. ऋग्वेद 5/40/6.
2. व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्म्मणा यातयज्जना नि वर्हिषि सदतं सोमपीतयै ।। ऋग्वेद–5/72/2
3. अथर्ववेद 7/26/6
4. अथर्ववेद 4/15/13
5. वर्णाश्रमेषु वसतां तापसानान्तु यत्फलम्। राजसूयसहस्रैस्तु शतवर्षाग्निहोत्रताः।। ओदुम्बरसंहिता–पृ० 215
6. औदुम्बरसंहिता श्लोक–1038
7. 'इत्थं समाचरति यः स सुखं विहृत्य मर्त्यः प्रयाति पद्मापदि पद्मयोनेः।' भ० पु० 4/8/25
8. विद्यावदातहृदया मधुरस्वरास्ते रूपान्विता बहुकलाकुशला भवन्ति।। भ० पु० 4/35/20
9. भविष्यमहापुराण 4/52/38
10. इत्येष कयिता वीर तृतीया तिथिरूत्तमा। यामुपोष्य नरों राजन्नृद्धिं वृद्धिं श्रियं भजेत्।। भ० पु० 1/21/33
11. मतिमान्धृतिमान्वाग्मी भाग्यवानकामकारवान्। असाध्यान्यपि साद्वेह क्षणादेव महान्त्यपि।। भ० पु० 1/22/4
12. अग्निमहापुराण – 175/12
13. लिङ्गमहापुराण 1/82/24
14. निर्णयसिन्धु प्रथमपरिच्छेद पृ० 55
15. 'दानं व्रतानि नियमा ज्ञानं ध्यानं हुतं जपः यत्नेनापि कृतं सर्वं क्रोधितस्य वृथा भवेत्।' निर्णयसिन्धु प्रथमपरिच्छेद पृ० 56